व्यवसाययोजना

हथकरघा

(शॉल , स्टॉल व मफ़लर बुनाई)

देवता वीर नाथ स्वयं सहायता समूह (शोगी उप समिति)

जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	न्यूल
उप-समिति	शोगी
ग्राम पंचायत	**न्यूल**
वन परिक्षेत्र	**वन्यप्राणी परिक्षेत्र,कुल्लू**
वनमंडल	**वन्य प्राणी मंडल कुल्लू**
वनवृत्त	GHNP Circle , शमशी

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधर परियोजना

(जाईका वित्तपोषित)

विषय –सूची

क0सं0	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	परिचय	3
2	कार्यकारिणी सारांश	3-5
3	स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण व सूची	5-6
4	गांव की भौगोलिक स्थिति का विवरण	6
5	आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण	6-7
6	उत्पादन की प्रक्रियाऐं	7-8
7	उत्पादन नियोजन	8
8	कच्चे माल की आवश्यकता एवं अनुमानित उत्पादन	8-9
9	विक्रय तथा विपणन	9
10	सदस्यों के मध्य प्रबन्धन का विवरण	10
11	शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)	10-11
12	सम्भावित जोखिम व उनको कम करने के उपाय	11
13	व्यवसाय योजना की अर्थव्यवस्था का विवरण	11-12
14	अर्थव्यवस्था का सारांश	13
15	अनुमान	13
16	उद्यम हेतूलाभ– लागत विश्लेषण	14
17	धन की आवश्यकता/धन की आवश्यकता का नियोजन	14
18	सम छेदन बिंदु	15
19	ऋण वापिस का किश्तवार नियोजन	14-15
20	समूह के नियम	16
21	समूह की सहमति तथा प्रधान, जैव विविधता उपसमिति न्यूल का अनुमोदन / स्वीकृति	17
22	स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के फोटो	18-19

1. परिचय

हथकरघा उद्योग प्राचीनकाल से ही हाथ के कारीगरों की आजीविका प्रदान करता आया है। भारत में हथकरघा ऊद्योग समय के साथ सबसे महत्वपूर्ण कुटीर व्यापार के रूप में उभरा है। हथकरघा बुनकर कपास, रेशम और ऊन के शुद्ध रेशों का उपयोग कर उत्पाद तैयार करते रहे हैं। हैंडलूम उद्योग भारत की सांस्कृतिक विरासत का आवश्यक अंग है। पहले कुल्ल्वी लोग सादे शॉल बुनते थे लेकिन हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के रामपुर से बुशहरी शिल्पकार के आने के बाद पैटर्न वाले हथकरघा का चलन अस्तित्व में आया। बहुत समय पहले तक पुरुष और महिलाएं अपने घरों में पारंपरिक खड्डियों (Pitlooms) में बुनाई का काम करते थे और सार्दियों के लिए परिवार के लिए गर्म कपड़ों की स्वयं व्यवस्था करते थे। उसके बाद हथकरघा का चलन शुरू हुआ, यह संभवत: ब्रिटिश काल में उनके प्रभाव के कारण हुआ। कुल्लू की पारंपरिक बुनाई उत्पादों में दोडू, पट्टू, पट्टी (Tweed), शाल, टोपी के बार्डर व मफलर आदि आते हैं। सत्तर के दशक के पश्चात् पर्यटकों के बढ़ते आगमन व उसमे लगातार होती वृद्धि व पर्यटकों के कुल्लू हस्तशिल्प उत्पादों में रूचि इस कार्य में लगे लोगों खासकर महिलाओं के लिए, जो इस क्षेत्र के बुनकरों का लगभग 70% हैं, की आजीविका का साधन बनता गया। मैदानी क्षेत्रों में बने पावरलूम उत्पादों से इस क्षेत्र में विभिन्न कार्य कर रहे शिल्पियों और व्यवसाइयों को अपने उत्पादों के विपणन में कठिनायाँ आ रही है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार समय समय पर इस क्षेत्र को प्रोत्साहन देने में प्रयासरत है। अभी हाल ही में भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर नग्गर के शरण गांव को हैंडलूम क्रॉफ्ट विलेज में शामिल किया गया है। इस गांव में मूलभूत सुविधाओं के सृजन तथा सौंदर्यीकरण पर लगभग 1.40 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जाएगी। गांव में भव्य हैंडलूम सुविधा केंद्र का निर्माण किया जाएगा। इसमें तैयार किए गए उत्पादों को प्रदर्शित किया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा संचालित तथा जाइका वित्तपोषित " **हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना**" (PIHPFEM&L) के माध्यम से पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन के साथ साथ वनों के पास रहने वाले समुदायों की आजीविका में सुधार के प्रयास किये जा रहे हैं। महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन कर के उनकी रूचि के अनुसार गतिविधियों को चुन कर इन समूहों की सहायता की जा रही है। इस प्रकार की गतिविधियों में एक गतिविधि हथकरघा, जो कुल्लू का पारंपरिक शिल्प है, में भी महिलाओं ने काम करने की इच्छा जताई है। न्यूल जैवविविधता प्रबंधन कमेटी की शोगी उप समिति के "देवता वीर नाथ" स्वयं सहायता समूह ने हथकरघा की गतिबिधि का चयन किया है जिसके हर पहलू को ध्यान में रख कर इस व्यवसाय योजना को बनाया गया है।

2. कार्यकारिणी सारांश

हिमाचल प्रदेश के पश्चिम हिमालय में स्थित है। यह राज्य कुदरती सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक व धार्मिक धरोहर से भरपूर है। राज्य में विविध पारितंत्र, नदियाँ व घाटियाँ पाई जाती है। इसकी आबादी 70 लाख के करीब है। इसका भौगोलिक क्षेत्र 55673 वर्ग कि० मी० है। हिमाचल प्रदेश में शिवालिक पहाडियों से लेकर मध्य हिमालय का क्षेत्र के ऊँचाई व और ठंडे जोन का क्षेत्र पाया जाता है। राज्य के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में से 6 जिले में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन और आजीविका सुधार परियोजना जाईका (JICA) के सहयोग से चलाई जा रही है। जिसमे कुल्लू ज़िला भी शामिल है।

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाईका वित्तपोषित) प्रारंभ होने पर जैवविविधता प्रबंधन कमेटी न्यूल की "शोगी" उप समिति की सूक्षम योजना बनाई गयी है। वन विकास समिति के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व बागवानी है परन्तु प्रत्येक परिवार की औसत भूमि चार-पांच बीघा से कम है इसके इलावा सिंचाई के कोई भी साधन नहीं है। अत: अधिकतर लोग जिले के अंदर व जिले के बाहर मजदूरी कमाने जाते हैं तथा सिचांई की उचित व्यवसाय ना होने के कारण लोगों को उनके आय में आपेक्षित बढोतरी नहीं हो पा रही है। यहाँ के लोग मुख्यत: गेहूं, मक्की, जौ व दालों की खेती करने के साथ सेब, प्लम, नाशपति व खुमानी इत्यादि बागवानी फसले उगाते हैं। आय के वैकल्पिक साधन ना होने के कारण मजदूरी के लिए घर से वाहर जाना पड़ता है। इस समस्या उबरने के लिए स्वयं सहायता समूह देवता वीर नाथ ने शॉल, स्टॉल और मफलर इत्यादि का कार्य करके अपनी आजीविका बढाने का निर्णय लिया है। आजीविका सुधार योजना गतिविधि के लिए स्थानीय स्वयं सहायता समूह बनाये गए हैं इन में से वीर नाथ स्वयं सहायता समूह का 09 जून, 2020 को गठन किया गया है। इस समूह में कुल 20 महिला सदस्य है जिन में से सोलह सदस्य अनुसूचित जाति व चार सदस्य सामान्य श्रेणी से हैं। ये चार महिलाएं भी अत्यंत निर्धन परिवारों से सम्बन्ध रखती हैं । इस समान रुची समूह ने विस्तार से चर्चा करने पर शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने व विपणन करने का निर्णय किया है।

इस समूह में कुछ सदस्य शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर बुनाई का कार्य पहले से ही कर रही है । उन का अनुभव व हस्तकला शेष सदस्यों कअ मार्गदर्शन करेगा, यद्यपि परियोजना की और से सभी को उचित प्रशिक्षण भी दिया जाएगा ।उत्पादन के बाद प्रारंभ में विपणन करने के लिए स्थानीय दुकानदारों या थोक विक्रेताओं के साथ समूह को जोड़ा जाएगा। दक्षता व उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ विपणन की संभावनाओं को और अधिक स्तर में खोजने की और इसमें विस्तार की आवश्यकता होगी । अभी हाल ही में मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश ने हथकरघा दिवस पर बताया था कि प्रदेश सरकार हिमाचल के हथकरघा उत्पादों की विक्री फ्लिपकार्ट के माध्यम से करने हेतु वार्ता कर रही है । उम्मीद है कि इस प्रकार के प्रयासों से स्वयं सहायता समूहों की आजीविका के साधनों में निरंतर सुधार हो सकेगा । समूह के सदस्य सामूहिक तौर पर ज्यादा मांग में उत्पादन करके अपनी आजीविका बढा सकती है। समूह ने तय किया है कि पूंजीगत लागत हेतु परियोजना की सहायता से 75% तथा शेष 25% पूंजीगत व्यय को नकदी कैश के रूप इकट्ठा करके देंगे। समूह के सदस्य बैंक से ऋण लेने में हिचकिचा रहीं है अत: प्रथम चक्र में 50% उत्पादन करेंगे तथा इससे कमाए गए लाभांश व मजदूरी से दुसरे चक्र के लिए आवर्ती व्यय करेंगे। शेष लाभांश को आपस में बटवारा करेंगे। अगले चक्र के बाद सभी सदस्य समान रूप से लाभांश व मजदूरी को आपसी सहमती से बंटवारा करेंगे ।

शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने के लिए कच्चा माल व खड्डीयां स्थानीय बाज़ार में उपलब्ध है तथा विपणन की भी स्थानीय स्तर पर अपार सम्भावना है क्योंकि कुल्लू घाटी में लगभग पूरी साल पर्यटकों का आना जाना रहता है। कुल्लू के शॉल, स्टॉल, बॉर्डर, टोपी और मफलर आदि की सुदरता भारतवर्ष में विख्यात है । पर्यटक घर लोटते समय अपने परिवार व मित्रों के लिए उपहार हेतु प्रचुर मात्रा में खरीददारी करते है। समूह के सदस्यों को परियोजना शॉल, स्टॉल, बार्डर और मफलर बनाने का प्रशिक्षण परियोजना के खर्चे से ही दिया जाएगा तथा पूंजीगत व्यय के 75% के बराबर सहायता राशी भी परियोजना देगी। क्योंकि यदि समूह की महिलाएं अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति अथवा निर्धन वर्ग से सम्बन्ध रखती हैं तो वह समूह परियोजना से पूंजीगत व्यय का 75% अंशदान प्राप्त कर सकता है । खड्डीयों को गाँव में पहुँचाने व स्थापित करने आदि पर जो खर्च होगा उसे भी परियोजना से किया जायेगा। इसके अतिरिक्त समूह को 1,00,000/- परिक्रामी निधि (Revolving Fund) दिया

जाएगा। समूह ने तय किया है कि सभी सदस्य नियम व शर्तो के हिसाब से तथा आपसी सहमति से कार्यो व इससे होने वाले लाभों का आपसी बंटवारा करेंगे।

यह व्यवसाय योजना बनाने के लिए श्री जूगत राम उत्पादन तकनीकी सहायक रिटायर्ड (हिम बुनकर) से हर पहलु पर चर्चा की गयी । श्री जूगत राम से विस्तार से चर्चा करने के बाद उनकी सलाह के अनुसार व्यवसाय योजना बनाई गयी है। व्यवसाय योजना बनाते समय विशेषज्ञ ने समूह के सदस्य की सख्यां शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने की क्षमता तथा कच्चे माल की उपलब्धता मांग व विपणन को ध्यान में रखकर 80 शॉल, 140 स्टॉल और 135 मफलर प्रतिमाह तैयार करने की व्यवसाय योजना बनाई है। बॉर्डर की भी बाज़ार में खफत व मांग है परन्तु समूह इस उत्पाद में कार्य करने के बारे कुछ समय पश्चात् निर्णय लेगा I समूह औसतन वर्षभर 4 से 5 घंटे प्रतिदिन का समय निकालकर उपरोक्त उत्पादों का उत्पादन करेगा। मार्च के मध्य से नवम्बर तक खेती बाड़ी के कार्यों से कम समय मिलेगा परन्तु शेष महीनों में इस गतिविधि के कार्यों के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध होगा । इस सबंध में श्री जूगत राम या अन्य व्यक्ति जो इन कार्यों में दक्ष पाया जायेगा, द्वारा मोके पर शाल, स्टॉल और मफलर का प्रशिक्षण मोके पर जा कर प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा शुरू में क्वालिटी कण्ट्रोल, डिज़ाइन बनाने व विपणन में भी इनकी सेवाएँ लेना प्रस्तावित है।

3 स्वयं सहायता समूह/समान रूची समूह का विवरण

3.1	स्वयं सहायता समूह का नाम	देवता वीर नाथ
3.2	जैवविविधता प्रबंधन कमेटी	न्यूल
3.3	उपसमिति का नाम	शोगी
3.4	वन परिक्षेत्र	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.5	वन मण्डल	वन्यप्राणी, कुल्लू
3.6	गांव	शोगी
3.7	विकास खण्ड	कुल्लू
3.8	जिला	कुल्लू
3.9	समूह के कुल सदस्यों की संख्या	20 महिलाएं
3.10	समूह के गठन की तिथि	09.06.2020
3.11	समान रूचि समूह की मासिक बचत	50/-
3.12	बैंक का नाम और शाखा जंहा समूह का खाता संचाालित	काँगड़ा सेन्ट्रल कोपरेटिव बैंक बजौरा
3.13	बैंक खाता संख्या	50072941395
3.14	समूह की कुल बचत	15000/-
3.15	समूह द्वारा सदस्यों को दिया गया ऋण	अभी तक नही
3.16	कैश क्रैडिट सीमा समूह सदस्यों द्वारा वापस किया गया ऋण की स्थिति	अभी नहीं लिया

समूह में सम्मिलित सदस्यों का ब्यौरा निम्न प्रकार से है :

क्रमांक	लाभार्थी का नाम व पता सुश्री/श्रीमती	पिता/ पति का नाम श्री	पद	गांव	आयु	लिंग	श्रेणी	सम्पर्क

1	चिंता देवी	धनि राम	प्रधान	शोगी	32	स्त्री	अनु० जाति	8580899660
2	सीमा	रोशन लाल	सचिव	शोगी	26	स्त्री	अनु० जाति	7876650010
3	गीता देवी	प्यारे लाल	कोषाध्यक्ष	शोगी	38	स्त्री	सामान्य	8580948674
4	बिमला देवी	सोभे राम	सदस्य	शोगी	42	स्त्री	अनु० जाति	9805358742
5	फुला देवी	देवी राम	सदस्य	शोगी	39	स्त्री	अनु० जाति	7807794021
6	ढाली देवी	प्रेम चन्द	सदस्य	शोगी	38	स्त्री	अनु० जाति	9817879988
7	राम कली	दिले राम	सदस्य	शोगी	39	स्त्री	अनु० जाति	7876646083
8	पिंगला देवी	डोले राम	सदस्य	शोगी	41	स्त्री	सामान्य	9015020523
9	पुष्पा देवी	रूम सिंह	सदस्य	शोगी	34	स्त्री	अनु० जाति	7876798820
10	हीरा मणि	मीने राम	सदस्य	शोगी	26	स्त्री	अनु० जाति	7876551492
11	कुंज्मा देवी	मेहर सिंह	सदस्य	शोगी	29	स्त्री	अनु० जाति	7018939099
12	लता देवी	नोखु राम	सदस्य	शोगी	38	स्त्री	अनु० जाति	8219457207
13	जीवन लता	ढाले राम	सदस्य	शोगी	28	स्त्री	अनु० जाति	9418929616
14	सवित्रा देवी	भीमी राम	सदस्य	शोगी	45	स्त्री	अनु० जाति	9817202327
15	छैल्लो देवी	चुनी लाल	सदस्य	शोगी	48	स्त्री	सामान्य	9459923371
16	कृष्णा देवी	लाल चन्द	सदस्य	शोगी	45	स्त्री	सामान्य	9418893106
17	एइला वती	तांदू राम	सदस्य	शोगी	46	स्त्री	अनु० जाति	8580992038
18	नूर्वी देवी	चानन सिंह	सदस्य	शोगी	48	स्त्री	अनु० जाति	8262905679
19	सभिन्द्रा देवी	पुरखु राम	सदस्य	शोगी	33	स्त्री	अनु० जाति	8988662293
20	तारा देवी	चैत्र सिंह	सदस्य	शोगी	38	स्त्री	अनु० जाति	8894639960

4. गांव की भौगोलिक स्थिति

4.1	जिला मुख्यालय से दूरी	25 कि0मी0
4.2	मुख्य सड़क से दूरी	4-5 km लिंक रोड पर
4.3	स्थानीय बाजार का नाम और दूरी	कुल्लू 25, भुन्तर 14 कि0मी0
4.4	मुख्य बाजार से दूरी और नाम	कुल्लू 25 कि0मी0
4.5	अन्य प्रमुख शहरों और कसबों से दूरी	मनाली 65 कि0मी0 भुन्तर 14 कि0मी0
4.6	बाजार/बाजारों से दूरी जहां पर उत्पादन की बिक्री की जायेगी	कुल्लू 25 कि0मी0 मनाली 65 कि0मी0 भुन्तर 14 कि0मी0
4.7	ग्राम के सम्बन्ध में अन्य कोई विशिष्ठता जो समूह द्वारा चयनित आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित हो	कुछ सदस्य पहले से हथकरघा बुनाई से अवगत हैं

5. आय सृजन गतिविधि से सम्बन्धित उत्पाद का विवरण

5.1	उत्पाद का नाम	शॉल, स्टॉल, और मफलर

5.2	उत्पाद की पहचान की पद्वति	समूह की कुछ सदस्य अपने स्तर पर पहले से ही शाल, स्टाल व बॉर्डर बुनाई का कार्य करती है व उत्पादित समान को स्थानीय बाजार में भारी मांग है। समूह में उत्पादन व विपणन करने पर अतिरिक्त आय की आपार सभावना है।
5.3	समान रूचि समूह के सदस्यों की सहमति	हां (सहमति पत्र सलंग्न है।)

6. उत्पादन की प्रक्रियाओं का विवरण

सर्व प्रथम समान रूची समूह के सदस्यों को परियोजना द्वारा शॉल, स्टॉल, और मफलर आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाऐगा। प्रशिक्षण के उपरान्त समूह के सदस्यों द्वारा उत्पाद तैयार करने में निम्न प्रक्रिया की जाऐगीः–

1- शाल, स्टॉल, का ताना व वाना, वार्पिग मशीन के द्वारा खरीद के स्थान पर ही विक्रेता द्वारा लगवाऐगें। इससे समय और उत्पादों की मज़दूरी दर का खर्चा कम होगा।
2- समूह में सभी सदस्य आपस में कार्य का बटवारा करके शॉल, स्टॉल और मफलर बनाने का कार्य करेगें।
3- सदस्य बारी–बारी विपणन करेगें व कच्चा माल भी लाऐंगे।
4- समूह के सदस्य प्रति दिन 4 से 5 घण्टे कार्य करेगें।
5- प्रत्येक सदस्य द्वारा समूह के कार्यों पर लगाये समय का ब्योरा रखा जायेगा I

प्रशिक्षण के उपरान्त समूह द्वारा निम्नलिखित उत्पादों का कार्य किया जाऐगा। जिसका विवरण इस प्रकार से है :

1. शॉल

कुल्लू शाल अपने ज्यामितीय पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। विशिष्ट कुल्लू शॉल के दोनों सिरों पर ज्यामितीय डिजाइन होते हैं। ज्यामितीय डिजाइनों के अलावा, शॉल फूलों के डिजाइनों में बुने जाते हैं, जो केवल कोनों पर या सीमाओं पर ही होते हैं। प्रत्येक डिज़ाइन में एक से 8 रंग हो सकते हैं। परंपरागत रूप से, चमकीले रंग, जैसे लाल, पीले, मैजेंटा गुलाबी, हरे, नारंगी, नीले, काले और सफेद रंग का इस्तेमाल पैटर्निंग के लिए किया गया था और सफेद, काले और प्राकृतिक भूरे रंग को इन शॉलों में आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन वर्तमान समय में ग्राहकों की मांग को ध्यान में रखते हुए इन चमकीले रंगों को धीरे–धीरे पेस्टल रंगों से बदला जा रहा है। विभिन्न रंगों में रंगे मिल स्पून यार्न का उपयोग जमीन के लिए किया जाता है, जबकि सीमा में पैटर्न के लिए ऐक्रेलिक रंगों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। ये शॉल भेड़ की ऊन, अंगोरा, पश्मीना, याक ऊन और हाथ से बनी सामग्री में उपलब्ध हैं। शॉल की कीमत ऊन की गुणवत्ता और उसमें इस्तेमाल किए गए पैटर्न की संख्या और चौड़ाई पर निर्भर करती है। इनमे लगने वाले धागों की किसम, रंग, डिज़ाइन आदि का चयन बाज़ार की मांग पर निर्भर करेगा। विभिन्न डिजाईनों की

शॉले 10 सदस्यों द्वारा तैयार की जाएगी। अनुमान है कि प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 4 दिन में 1 शॉल तैयार कर सकती है। 10 सदस्य एक महीने में 80 शॉल बना सकते हैं।

2. **स्टॉल**

स्टोल एक महिला का शॉल है, विशेष रूप से महंगे कपड़े का औपचारिक शॉल। स्टोल का उपयोग परिष्कृत और फैशन के प्रति जागरूक महिलाएं करती हैं। इसे शॉल की तरह शरीर के चारों ओर लपेटा जा सकता है या कंधों से लटकाया जा सकता है। एक स्टोल आमतौर पर शॉल की तुलना में लम्बाई व चौड़ाई में छोटा होता है। विभिन्न डिजाईनों की स्टॉल 2 सदस्यों द्वारा तैयार किया जायेगा। प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घण्टें कार्य करने पर 2 दिन में 1.3 स्टॉल तैयार कर सकती है इस प्रकार एक सदस्य एक महीने में बीस और 7 सदस्य एक महीने में 140 स्टॉल तैयार कर सकते हैं।

3. <u>मफलर</u>

विभिन्न अवसरों पर विशिष्ट लोगों को सम्मानित करते समय टोपी और मफलर भेंट करना पहाड़ों की परंपरा में सम्मिलित है। विभिन्न डिजाईनों के मफलर 3 सदस्यों द्वारा तैयार किया जायेगा। प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रति दिन में 4 से 5 घंटे कार्य करने पर 2 दिन में 3 मफलर तैयार कर सकती है। इस प्रकार 3 सदस्य एक महीने में 135 मफ़लर बना सकती हैं।

7 उत्पादन हेतु नियोजन का विवरण

7.1	उत्पादन चक्र (दिनों में) 30 दिन प्रतिदिन 4–5 घंटे कार्य करेगें	80 शॉल 140 स्टॉल 135 मफलर
7.2	प्रति चक्र कार्यकताओं की आवश्यकता (संख्या)	10 सदस्य शॉल के लिए 7 सदस्य स्टॉल के लिए 3 सदस्य मफलर के लिए **कुल 20 सदस्य**
7.3	कच्चे माल का स्त्रोत	कुल्लू, भुन्तर
7.4	अन्य संसाधनों का स्त्रोत	कुल्लू ,शमशी, भुन्तर

- *प्रत्येक उत्पादन की मात्रा का अनुमान सांकेतिक है जिनका उत्पादन बाज़ार की मांग के अनुसार कम या अधिक करना होगा I*

8	**कच्चे माल की आवश्यकता एवं अनुमानित उत्पादन**					
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन
1	**शॉल (80:20 धागा)**					
क	ताना बाना	kg.	30	800	24000	80 शॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	2.5	500	1250	
ग	वार्पिंग मजदूरी		80	25	2000	

घ	मजदूरी	दिहाड़ी	150	275	41250	
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		80	25	2000	
	योग				**70500**	
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**					
क	ताना बाना	kg.	42	800	33600	140 स्टॉल
ख	केश्मीलोंन	kg.	4.6	500	2300	
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	105	275	28875	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		140	20	2800	
	योग				**67575**	
3	**मफलर ऊनी**					
क	ताना बाना	kg.	13.5	1500	20250	135 मफलर
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	45	275	12375	
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		135	15	2025	
	योग				**34650**	

9. विपणन/बिक्री का विवरण

8.1	सम्भावित बाजारों/स्थलों के नाम	**कुल्लू, भुन्तर, मनाली**
8.2	उत्पाद की बिक्री हेतू गांव से दूरी	कुल्लू 25 कि0मी0 मनाली 65 कि0मी0 भुन्तर 14 कि0मी0
8.3	बाजार में उत्पाद की अनुमानित मांग	उत्पादन से अधिक मांग है।
8.4	बाजार को चिन्हित करने की प्रक्रिया	खुदरा दुकाने में पर्यटकों के द्वारा बड़े पेमाने पर खरीदारी की जाती है तथा स्थानीय निवासियों द्वारा शादी व अन्य समारोहों पर खरीदारी की जाती है।
8.5	मौसम में परिवर्तन के अनुसार उत्पाद की मांग की स्थिति	सर्दी में उत्पादों की मांग बढ जाती है। गर्मियों में पर्यटक द्वारा खरीदारी करने पर सामान्य रहती है।
8.6	उत्पाद के संभावित खरीदार	पर्यटक व स्थानीय निवासी
8.7	क्षेत्र में संभावित उपभोक्ता	कुल्लू, लाहौल व मण्ड़ी जिला के निवासी
8.8	उत्पाद का विपणन तंत्र	समान रुची समूह को कुल्लू, मनाली और भुंतर के खुदरा दुकानदारों के साथ विपणन के लिए जोड़ा जाएगा तथा मेलों में प्रदर्शनी / स्टॉल लगा कर विपणन किया जाएगा।
8.9	उत्पाद के विपणन हेतु रणनीति	स्थानीय बाज़ार में मांग कम होने पर उत्पादन को मंडी, शिमला के खुदरा दुकानदारों से जोड़ा जाएगा। मांग बढने या कम होने पर उत्पादन को मांग के अनुसार बढाया या कम किया जाएगा।
8.10	उत्पाद का ब्राण्ड नाम	"देवता वीर नाथ " DVN

8.11	उत्पाद का ''नारा''	बुनाई से आजीविका सुधार

10 समूह सदस्यों के मध्य प्रबंधन का विवरण

- प्रबन्धन के लिए नियम बनाये जाएगें।
- समूह के सदस्य आपसी सहमति से कार्यो का बंटवारा करेंगें।
- बंटवारा कार्य की कुशलता व क्षमता के आधार पर किया जाएगा।
- लाभ का बंटवारा भी कार्य की गुणवता व कुशलता तथा मेहनत के आधार पर किया जाएगा।
- विपणन में अनुभव रखने वाले सदस्य बारी–बारी से विपणन करेगे।
- प्रधान व सचिव प्रबन्धन का मुल्यांकन एवं अवलोकन समस–समय पर करते रहेगें।
- प्रारम्भ में प्रथम चक्र में 50% उत्पादन व आवर्ती व्यय करेंगे तथा दुसरे चक्र के लिए प्रथम चक्र की मजदूरी व लाभांश से आवर्ती व्यय करेंगे। इस व्यय के बाद ही शेष लाभांश का आपस में बंटवारा करेंगे । आगामी चक्रों में समान रूप से लाभांश व मजदूरी का बंटवारा करेंगे ।

11. शक्ति, दुर्बलता, अवसर तथा चुनौती का विश्लेषण (SWOT Analysis)

शक्ति

1. सभी समूह सदस्य सामान व् अनुकूल सोच रखते है।
2. समूह के कुछ सदस्य छोटे पैमाने उत्पाद बनाने व विपणन का कार्य पहले से कर रही है। जिस से समूह के अन्य सदस्यों को बुनाई व विपणन में असानी होगी।
3. उत्पादन लागत कम है तथा उत्पादन मांग अधिक है।
4. सदस्यों को घर के समीप ही उपलब्ध समय में आय वृद्धि का साधन मिलेगा ।

दुर्बलता : -

1. समूह के लिए नया काम है व अनुभव की कमी है।
2. समूह में कार्य करने में दक्ष नहीं है।
3. सदस्यों की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है।
4. क्रेय विक्रेय की समझ प्राप्त करने में समय लगेगा।

अवसर : -

1. समूह में कार्य करने पर बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है।
2. स्थानीय बाज़ारों में शॉल, स्टॉल, बॉर्डर और मफलर इत्यादि की पर्यटन क्षेत्र होने के कारण मांग अधिक है।
3. परियोजना द्वारा खड्डी और चरखा इत्यादि खरीदने पर 50% अथवा 75% मूल्य को वहन किया जाएगा ।
4. परियोजना द्वारा हथकरघा का प्रशिक्षण विशेषज्ञ द्वारा मौके पर या प्रशिक्षण संस्थानों में

करवाया जाएगा।

जोखिम

1. समूह में आंतरिक झगडे होने पर समूह का कार्य प्रभावित हो सकता है।
2. मांग व पारदर्शिता के अभाव में समूह टूटने की सम्भावना हो सकती है।
3. उत्पादों की मांग अधिकतर पर्यटकों के आगमन पर निर्भर रहेगा I
4. हैंडलूम में स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा

12 . संभावित चुनोतियाँ तथा उन को कम करने के उपाय

क्र0सं0	जोखिमों का विवरण	जोखिम कम करने के लिए उपाय
1	उत्पादों की स्थानीय बाज़ारों में मांग कम होने की सम्भावना हो सकती है I जिसका विक्री व् आय पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा I	शिमला, मंडी के बाज़ारों के दुकानदारों को विपणन के लिए जोड़ा जाएगा।
2	उत्पाद की गुणवत्ता घटने से विक्री कम हो सकती है I	गुणवत्ता बनाये रखने के लिए समूह को उच्च मापदंड और कौशल अर्जित करना होगा ।
3	स्थापित संस्थाओं से सपर्धा का सामना करना होगा I	गुणवत्ता व कार्य कौशल बनाये रखना होगा। विपणन की नयी संभावनाओं को तलाशते रहना होगा।

13. परियोजना की अर्थव्यवस्था का विवरण

पूंजीगत व्यय

क्रम सं	नाम	संख्या	दर	कुल लागत	% अंश	परियोजना का अंश (75%)	लाभार्थी का अंश (25%)	योग
1	खड्डी 50"	10	15000	150000	75/25	112500	37500	150000
2	स्टैंड सहित चरखे	5	1700	8500	75/25	6375	2125	8500
3	बॉक्स	3	2000	6000	75/25	4500	1500	6000
	योग			**164500**		**123375**	**41125**	**164500**

	गतिविधि की अर्थव्यवस्था का व्योरा						
	आवर्ती व्यय						
क्र०सं0	नाम	इकाई	मात्रा	दर	राशी	आपेक्षित उत्पादन	कुल राशी
1	**शॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	30	800	24000	80 शॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	2.5	500	1250		
ग	वार्पिंग मजदूरी		80	25	2000		

घ	मजदूरी	दिहाड़ी	150	275	41250		
ड	पेकिंग,धुलाई अदि		80	25	2000		
					70500		**70500**
2	**स्टॉल (80:20 धागा)**						
क	ताना बाना	kg.	42	800	33600	140 स्टॉल	
ख	केश्मीलोंन	kg.	4.6	500	2300		
ग	मजदूरी	दिहाड़ी	105	275	28875		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		140	20	2800		
					67575		**67575**
3	**मफलर ऊनी**						
क	ताना बाना	kg.	13.5	1500	20250	135 मफलर	
ख	मजदूरी	दिहाड़ी	45	275	12375		
घ	पेकिंग,धुलाई अदि		135	15	2025		
					34650		**34650**
	योग						**172725**
2	स्थान का किराया, बिजली बिल आदि				1500		
3	किराया कच्चा माल व तैयार माल लाना ले जाना				1500		
4	अन्य खर्चे (रिपेयर्स स्टेशनरी आदि)				750		
					3750		**3750**
	योग आवर्ती लागत						**176475**
	आवर्ती व्यय (आवर्ती लागत-मजदूरी) 176475-82500						**93975**
	कुल व्यवसाय योजना लागत 164500+93975						**258475**

4	**आय**						
	प्रत्यक्ष आय						
	शॉल		80	1149	91920		
	स्टॉल		140	601	84140		
	मफ़लर		135	302	40770		
	योग प्रत्यक्ष आय				216830		**216830**
	अप्रतयक्ष बचत या आय यदि कोई हो				15000		
	कुल अनुमानित आय				231830		**231830**

14	**अर्थव्यवस्था का सारांश**			
	उत्पादन की लागत			

1	कुल आवर्ती लागत	176475		
2	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक ह्रास	1650		
3	बैंक ऋण पर % 12 ब्याज वार्षिक	2146		
	योग	**180271**		**180271**

15	**विक्रय मूल्य की गणना प्रति वस्तु तथा कुल उत्पादन की विक्री से आय का अनुमान**							
क्र० सं0	मद	अनुमानित उत्पादन संख्या	उत्पादन की लागत	लाभ प्रतिशत	लाभांश	कुल विक्रेय मूल्य (3+5)	बाज़ार विक्रय दर	कुल उत्पादन की विक्री से आय
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	शॉल	80	881	30	264	1149	1350	91920
2	स्टॉल	140	482	25	121	601	700	84140
3	मफ़लर	135	257	18	46	302	400	40770
	बिक्री से आय का योग							**216830**

16	**मूल्य-लाभ विश्लेषण (एक चक्र =1 महीना)**			
क्र०सं0	मद	राशी	कुल राशी	
	पूंजीगत व्यय पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास	1650	**1650**	
	आवर्ती लागत			
	कमरे का किराया, बिजली खर्चा अदि	1500		
	मजदूरी	82500		
	कच्चा माल	81400		
	अन्य खर्चे(रिपेयर, स्टेशनरी अदि)	750		
	परिवेहन खर्चे सामान कच्चा व तैयार	1500		
	पेकिंग, ड्राई क्लीनिंग आदि व्यय	8825		
	योग	176475	**176475**	
	कुल लाभ 216830-(1650+176475)			**38705**
	उत्पाद विक्री से कुल लाभ(लाभ+मजदूरी+किराया) 38705+82500+1500			**122705**
	एक माह पश्चात् समूह में वितरण योग्य राशी (उत्पादों से आय-(ओसत मूलधन व ब्याज वापसी+दुसरे चक्र हेतु आवर्ती व्यय)=216830-(2705 +93975)			**120150**
	उत्पादन आधा होने पर समूह में बाँटने योग्य राशी=उत्पाद विक्री का 50%-(औसत मूलधन व ब्याज वापसी+दुसरे चक्र हेतु राशी आवर्ती व्यय)=108415-(2705+93975)			**11735**

17	**धनराशी की आवश्यकता**
क	समूह की पहले माह की आवश्यकता

क्र०सं0	मद	राशी
1	पूंजीगत व्यय	164500
2	आवर्ती व्यय का 50%	46988
	योग	211488
	अथवा	**211500**

	धन का नियोजन	
क्र०सं0	वित्तीय प्रबंध का विवरण	राशी
1	परियोजना द्वारा पूंजीगत व्यय का अनुदान	123375
2	समूह के सदस्यों का नकद योगदान	41125
4	समूह की वचत	15000
	योग	179500
	बैंक ऋण की राशी (211500-179500)	**32000**

**बैंक से ऋण लेने के लिए परियोजना द्वारा 1,00,000 परिक्रिमी निधि प्रदान की जायेगी तथा इसके इलावा आवर्ती व्यय के लिए 32000 रुपए बैंक से ऋण लिया जाएगा /*

18. सम विच्छेदन बिन्दू (ब्रेक इविन प्वाइन्ट) की गणना:

ब्रेक इवन पॉइंट = 264 + 121 + 46 { लाभ (एक शॉल + एक स्टॉल + एक बॉर्डर+ एक मफलर) } = 431

अत: ब्रेक इवन पॉइंट = 164500/431 = 381 दिन अर्थात 12 1/2 महीने

प्रत्येक शॉल, स्टॉल और मफलर के लाभ की गणना पर सम विच्छेदन बिन्दू 381 दिनों अथवा 12 1/2 महीनों में उपरोक्त अनुपात में विक्रय करने पर प्राप्त किया जा सकता है।

19. बैंक से ऋण वापसी का किश्तवार नियोजन

क्र0स0	माह	ऋण वापसी						संचय ऋण वापसी	अवशेष ऋण		
		मूल धन	कुल ब्याज	परियोजना द्वारा 5 % ब्याज देय	समूह द्वारा शेष ब्याज 7% देय	समूह द्वारा प्रति माह देय किश्त	कुल मूलधन वापसी		मुलधन	12 प्रतिशत ब्याज	कुल
1	माह 1								32000	320	32320
2	माह 2	2467	320	133	187	2787	2600	2500	29533	295	29829
3	माह 3	2477	295	123	172	2772	2600	5000	27056	271	27327
4	माह 4	2487	271	113	158	2758	2600	7500	24569	246	24815
5	माह 5	2498	246	102	143	2743	2600	10000	22071	221	22292

6	माह 6	2508	221	92	129	2729	2600	12500	19563	196	19759
7	माह 7	2518	196	82	114	2714	2600	15000	17045	170	17215
8	माह 8	2529	170	71	99	2699	2600	17500	14516	145	14661
9	माह 9	2540	145	60	85	2685	2600	20000	11976	120	12096
10	माह 10	2550	120	50	70	2670	2600	22500	9426	94	9521
11	माह 11	2561	94	39	55	2655	2600	25000	6866	69	6934
12	माह 12	2571	69	29	40	2640	2600	4354	0	0	0
13	माह 13	4294	0	0	0	3400	3400	0	0	0	0
	योग	32000	**2146**	**894**	**1252**	33252	32000	**0**	**0**	**2146**	**0**

- 12% वार्षिक ब्याज की गणना प्रतिमाह घटते हुए मूलधन के आधार पर की गई है।
- समायोजन के कारण अंतिम ई.एम.आई. नियमित ई.एम.आई. से कम हो सकती है।
- टर्म लोन के अतिरिक्त और भी अन्य विकल्पों सी०सी०एल० आदि पर आवश्यकता पड़ने पर निर्णय लिया जाएगा जिसमें भी समूह को कम से कम व्याज का भुगतान करना पड़े ।
- 50% उत्पादन व विक्री करने पर लाभ व मजदूरी के साथ 121205 रुपए को नहीं बाटेंगे तथा इस से अगले चक्र के लिए आवर्ती व्यय को बचा कर रखेंगे। अत: प्रथम माह केवल 11735 रुपए की राशी का बटवारा करेंगे।
- बैंक ऋण की दर में से 5% ब्याज परियोजना द्वारा सीधे बैंक के खाते में जमा किया जाएगा जिससे उनकी 894 रुपए की अतिरिक्त बचत होगी। । शेष व्याज समूह द्वारा अदा किया जाएगा।
- समूह द्वारा दुसरे माह में कुल उत्पादन का **शॉल, स्टॉल** और मफलर तैयार किये जायेंगे तथा इनके विक्रय करने पर समूह को मजदूरी के रूप में 82500 रूपए तथा लाभ से 38705 रूपए मिलेंगे। इस प्रकार प्रत्येक सदस्य को 4125 रुपए मजदूरी के रूप में आय होगी। परन्तु प्रथम माह में समूह के सदस्य 50% उत्पादन व आवर्ती व्यय करेंगे। इसके पश्चात् दुसरे माह में उत्पाद के विक्री होने पर पूरा उत्पादन करेंगे।

20. स्वयं सहायता समूह देवता वीर नाथ के नियम

1. समूह का काम : हथकरघा बुनाई (शॉल, स्टॉल और मफलर)
2. समूह का पता : गाँव शोघी , डाकघर न्यूल , तहसील और जिला कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।
3. समूह के कुल सदस्य : 20 (सभी महिलाएं)
4. समूह की पहली बैठक की तिथि: 09.06.2020.
5. समूह में हर 100 रूपए पर 2 रूपए ब्याज होगा।
6. समूह की मासिक बैठक हर माह की 5 तिथि को होगी।
7. समूह के सभी सदस्य हर माह की बचत की गई राशि को समूह में जमा करेगें।

8. स्वंय सहायता समूह की बैठक में सभी सदस्य को शामिल होना पड़ेगा।
9. स्वंय सहायता समूह का खाता काँगड़ा सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक बैंक शाखा बजौरा में खोला है खाता संख्या नंबर 50072941395 है।
10. समूह की बैठक में गेर हाज़िर रहने के लिए प्रधान व सचिव को उचित कार्य बता कर अनुमति लेनी होगी।
11. समूह में जो बचत की राशी जमा नहीं करवाते या 3 बेठकों तक समूह से गेर हाज़िर रहते है तो उस महिला को समूह से निकाल दिया जाऐगा।
12. समूह में जो व्यक्ति कारण बताए वगेर गेर हाज़िर रहता है तो अगली बैठक उस व्यक्ति के घर में होगी जिसका खर्च उस व्यक्ति को खुद करना होगा अगर दो सदस्य होगें तो खर्च मिल कर देना होगा।
13. भविष्य में स्वंय सहायता समूह के प्रधान व सचिव सर्व सहमति से चुने जाऐगें।
14. प्रधान व सचिव बैंक से लेन देन कर सकते है यह पद एक वर्ष तक मान्य होगा।
15. प्रधान, सचिव या सदस्य समूह के विरूद्व कोई काम नही करेगा समूह की रकम का सदा सदुपयोग करेगें।
16. अगर सदस्य किसी कारणवश समूह को छोड़ना चाहता है अगर इस व्यक्ति ने ऋण लिया है तो समूह को वापिस करना होगा तभी समूह को छोड़ समता है अन्यथा नही
17. ऋण का उदेश्य रकम की चुकोती का समय ऋण की किश्त और ब्याज की दर बैठक में तय की जाएगी।
18. आपातकालीन स्थिति के लिए प्रधान व सचिव के पास कम से कम 1000 रूपये की राशी होनी चाहिए।
19. स्वंय सहायता समूह के रजिस्टर को सभी सदस्यों के सामने पढ़ा व लिखा जाना चाहिए।
20. बड़ें ऋण लेने वालों को एक सप्ताह पहले की सूचना देनी होगी।
21. ऋण जरूरत के समय सभी सदस्यों को मिलना चाहिए।
22. अगर सदस्य बिना कारण से समूह को छोड़ना चाहता है तो उस सदस्य की जमा राशी समूह में बांटी जाएगी।
23. समूह को अपनी मासिक रिपोर्ट प्रति माह तकनीकी क्षेत्रीय इकाई (Field Technical Unit) के कार्यालय में देनी होगी।

समूह का सहमती पत्र

आज दिनाकं 26-11-21 को वीर नाथ स्वयं सहायता समूह की बैठक हुई। बैठक में प्रधान श्रीमती चिंता देवी की अध्यक्षता में हुई जिसमे समूह के सदस्यों ने सर्व सहमती से निर्णय लिया कि आय बढाने के लिए **शॉल, स्टॉल** और मफलर बुनाई का कार्य करने के लिए **हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तन्त्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना** (जाईका वित्तपोषित) से जुड़ने की सहमती प्रदान करते है तथा उपरोक्त परियोजना की सहायता से सभी सदस्यों द्वारा चयनित की गई गतिविधि जो कि हथकरघा बुनाई है, को इसकी व्यवसाय योजना के अनुसार या बाज़ार की मांग के अनुसार सभी सदस्य मिलजुल कर सफल बनायेंगे।

समूह के सचिव के हस्ताक्षर
सीमा

समूह के प्रधान के हस्ताक्षर
चिन्ता देवी

हस्ताक्षर
प्रधान,
जैव विविधता उपसमिति शेघी
......[illegible]

फील्ड तकनीकी यूनिट (FTU)
कुल्लू ।

स्वीकृत

कुल्लू मंडलीय प्रबंधन इकाई (DMU)
वन्यप्राणी मंडल, कुल्लू

Divisional Forest Office
Wild Life Division
KULLU (H.P)

स्वयं सहायता समूह देवता वीर नाथ (शोघी उप समिति) के सदस्य

Smt. Kunjama Devi

Smt. Samindra Devi

Smt. Savitra Devi

Smt. Bimla Devi

Smt. Lata Devi

Smt. Jeevan Lata

Smt. Heera Mani

Smt. Tara Devi